



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 01, अंक: 01 (अगस्त, 2024)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

भारत में बीज प्रमाणीकरण का महत्व

(काना राम कुमावत एवं दिलीप कुमार गुप्ता)

राजस्थान राज्य बीज एवं जैविक प्रमाणीकरण संस्था, पंत कृषि भवन, जयपुर, राजस्थान-302005, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: dkharsh2@gmail.com

बीज प्रमाणीकरण, बीजों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए की जाने वाली एक कानूनी प्रक्रिया है। इसका मकसद, किसानों को बेहतर किस्म के बीज उपलब्ध कराना और उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की आपूर्ति सुनिश्चित करना है। बीज प्रमाणीकरण के ज़रिए, बीजों की आनुवंशिक शुद्धता और भौतिक पहचान को सुनिश्चित किया जाता है। बीज प्रमाणीकरण का उद्देश्य अधिसूचित प्रकार और किस्मों के उच्च गुणवत्ता वाले बीजों और प्रसार सामग्री को प्रमाणीकरण के माध्यम से बनाए रखना और जनता के लिए उपलब्ध कराना है, ताकि आनुवंशिक पहचान और आनुवंशिक शुद्धता सुनिश्चित की जा सके। हमेशा से और आज भी कृषि उत्पादन में बीजों की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण रही है। बीज खेती की नींव का आधार और मूलमंत्र है। अतः अच्छी गुणवत्ता वाले बीज से, फसलों का भरपूर उत्पादन प्राप्त होता है।

कृषि बीजों की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और अखंडता सुनिश्चित करने में बीज प्रमाणन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें किसानों और बाजार को उपलब्ध कराए जाने से पहले बीजों की आनुवंशिक शुद्धता, भौतिक गुणवत्ता और समग्र प्रदर्शन का मूल्यांकन और सत्यापन करने की एक कठोर प्रक्रिया शामिल है।

बीज गुणवत्ता आश्वासन की प्रक्रिया आमतौर पर अधिकृत एजेंसियों या संगठनों द्वारा की जाती है जो विशिष्ट मानकों और विनियमों को लागू करते हैं।

यह मजबूत प्रक्रिया फसल उत्पादकता को बढ़ावा देने, आनुवंशिक अखंडता को बनाए रखने और बाजार के विश्वास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस ब्लॉग पोस्ट में, हम बीज प्रमाणन के महत्व पर गहराई से चर्चा करेंगे और पता लगाएंगे कि यह कैसे सफल और टिकाऊ कृषि की नींव रखता है।

बीज प्रमाणीकरण से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- बीज प्रमाणीकरण के तहत, बीजों का उत्पादन, कटाई के बाद का संचालन, और वितरण की प्रक्रिया को नियंत्रित और निरीक्षित किया जाता है।
- बीज प्रमाणीकरण के लिए, भारत सरकार ने कई फसल किस्मों के लिए बीज उत्पादक संस्थाओं और किसानों का पंजीकरण कराया है।
- बीज प्रमाणीकरण के लिए, पंजीकृत क्षेत्रों में फसल का निरीक्षण किया जाता है।
- बीज प्रमाणीकरण के लिए, बीजों का परीक्षण प्रयोगशाला में किया जाता है और मानक बीजों को टैग किया जाता है।
- प्रमाणित बीजों में आनुवंशिक शुद्धता ज्यादा होती है, और ये रोग मुक्त होते हैं।

बीज प्रमाणीकरण के चरण

- **आवेदन प्राप्ति और जांच:** आवेदन प्राप्त किया जाता है और उसकी जांच की जाती है, तथा बीज स्रोत, वर्ग और अन्य आवश्यकताओं का सत्यापन किया जाता है।
- **क्षेत्र निरीक्षण:** बीज फसल का निरीक्षण खेत में किया जाता है ताकि यह सत्यापित किया जा सके कि यह निर्धारित क्षेत्र मानकों को पूरा करता है। बीज की शुद्धता और विविधता की पहचान को सत्यापित करने के लिए दृश्य विशेषताओं का उपयोग किया जाता है।

- **कटाई के बाद पर्यवेक्षण:** कटाई के बाद बीज फसलों की निगरानी की जाती है, जिसमें प्रसंस्करण और पैकिंग के दौरान भी निगरानी की जाती है।
- **बीज परीक्षण:** बीज स्वास्थ्य परीक्षण बीज प्रमाणन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है।
- **लेबलिंग, टैगिंग, सीलिंग और प्रमाणपत्र अनुदान:** बीज को लेबल किया जाता है, टैग किया जाता है, सील किया जाता है और प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

बीज प्रमाणीकरण का महत्व

- बीज प्रमाणीकरण से जनता को उच्च गुणवत्ता वाले बीज मिलते हैं।
- प्रमाणित बीजों से फसल की पैदावार में बढ़ोतरी होती है।
- प्रमाणित बीजों से कीटनाशकों का इस्तेमाल कम करना पड़ता है।
- प्रमाणित बीजों से जैव विविधता का संरक्षण होता है।
- प्रमाणित बीजों से फसल विफलता का खतरा कम होता है।
- प्रमाणित बीजों से उत्पादन में 15-20% की बढ़ोतरी होती है।
- प्रमाणित बीजों से पौधे स्वस्थ और मजबूत होते हैं।
- प्रमाणित बीजों से खाद्य उत्पादन में सुधार होता है।
- प्रमाणित बीजों से आनुवंशिक पहचान और आनुवंशिक शुद्धता सुनिश्चित होती है।